International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

dk0; dk i;ktu

Mk0 lfork 'kekZ
,e0 ,0] ih0,p0Mh0
$2 lLdr f'kf{kdk
Ek-j-n-ck-m-fo-
lhrke<h

काव्य एक कलाहै, कलासोद्देश्य होतीहै।संस्कृत के काव्य–शास्त्रियो ने काव्य के प्रयोजनकोसंहर्षस्वीकारकियाहै।काव्य का उद्देश्य मानव–जीवन की i.krkgAdk0; ,d dykg] fdUrykd ugh] blfy, dfo dk degh dk0; g&dofjndk;Hkkok ok^^ vFkok** douh;dk0;** dfo&deykdkÙkjdeg] bl ykdkÙkjde d o.kuefui.k0;fDrghdfogA

^^ ykdkÙkjo.kukfui.kdfo&de --------A **

कविकर्मकोकाव्य–संसारकहागयाहैऔरकविको इस संसार का स्त्रष्टा ;k itkifr& ** vikjdk0;llkjdfojd% itkifr%A**

काव्य एक कर्त्तव्यकर्महैऔरउसकाउद्देश्य मानव जीवन की पूर्णताहै– यह हैवहउद्देश्य जोकवियों, काव्यचिंतकोऔरउच्चरसिकोसबकेलिए मान्य रहताआयाहैं।प्राचीनों ने व्यवहारिकदृष्टिकोप्रधानतादीहैऔरकाव्य कोअर्थ, /ke] dke d vfrfjDrek{k dk Hkhlk/kucrykk;kgAHkkjrh; fopkj/kkjk d मूलमेंविश्व के कल्याण की कामनीविशेषरहीहै, क्योंकि यहाँ

^^ loHkoUr lf[ku% lolUrfujke;k%A

सर्वेभद्राणिंपश्यन्तुमाकश्चिद् दुःखभाग्मवेत्।।''

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

tlhmnkjHkkouk,lnk l jghgAblfy, Hkkjrh; vkpk;k d द्वारानिर्दिष्टकाव्य के प्रयोजनो मे मंगलमय भावनासर्वत्र परिलक्षितहोतीहै।मनोविज्ञानऔरमनोविश्लेषणात्मक शास्त्र, इस संबंध egekjlgk;djggA

'नाट्यशास्त्र' के प्रणेताआचार्यभरत के नाट्य (काव्य) ei;ktukijfoLrkj l fopkjfd;kg A mud vu&lkjukVdlHkh d fy, विनोद का साधनहै, हित का उपदेष्टाहै, दुःखी–श्रमित, शोकातुरों का विश्रामदाताहै। धर्म, यश, आयु के लिए हितकारीहैतथाबौद्धिक विकास का eyHkhg&

^^ mÙkek/kee/;kukujk.kkdelJ;eA
हितोपदेशजननां धृतिक्रीडासुखादिकृत्।
दुःखार्त्तानांश्रमार्त्तानां शोकार्त्तानांतifLouke A
विश्रान्तिजननंकालेनाट्ययेतद् भविष्यति।
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितंबुद्धिविवर्धनम्।
शिवनिर्माण या भव्य आर्दशबतलायाहै।मम्मट ने इनप्रयोजनो का दो :ikeoxhdj.kdj v/;;u fd;ktkldrkg&
एककविसम्बन्धीऔरदूसरापाठकसम्बन्धी यदिकवि की दृष्टि से विचारकरेंतो यशसे] अर्थकृतेऔरशिवेतरक्षतयेकविनिष्टसिद्ध होतेहैतथा शेषपाठक के लिए।

eEeV }kjkvfHkfgrdk;; d bl ijl=h /;;evU; vkydkfjdk d dgdk;; ध्येय सभाविष्टहोजातेहैं।साहित्यदर्पणकार ने काव्य का प्रयोजननिम्नतरह l crk;kg&
^^ proxQYikfIr% l[kknYif/k;kefiA
dk;kno ;rLru rRLo:i fu:l;rAA^^

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

proXk l vfHkir thou d /ke] vFk] dkevkjek{k epkj /;; होतेहैं।उन्हेंपुरूषार्धचतुष्टय भीकहतेहैं।रामायण आदिकाव्यो के अनुशीलन से vUrkxRok^^ jkefnoriofrr0;e u jko.kkfnfrdR;kdR;k&iofrfuoRयुपदेशः।** vFkkr jkekfn dh rjggekjh lRdk;keiofrgkuhpkfg, vkjjko.kkfn }kjkfd;vidR;k से हमेंदूरहोनाचाहिए– इस उपदेशकोप्राप्तकरकेहम जीवन का Hk0; fuek.kdjuyxrg] blh dk uke /kegkrkgA

इतनाहीक्योंकाव्य की उपयोगितामेंतोपुराणोऔर शास्त्रो का Hkhiek.kg] vfXuijk.k dk ;g dFkug

^^ujRonyHkykdfo|k r= lnyHkkA
कवित्वंदुर्लभं तत्र शक्तिस्तय सुदुर्लभkAA**

lcligyrkllkjeekuo&thounyHkg]
bllHkhnyHkgdfoRoAeEEV dk dk0;&i;ktufuEug&

यशसेअर्थडकृतेव्यवहारविदेशिवेतरक्षतये।
Lk|% ijfuofर्तकान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।''

काव्य का प्रयोजन यश के लिए, धन के लिए 0;ogkjKkugr] vxxyfuokj.kgr] ykddY;k.kgr ,oeukfoukngrfd;ktkrkgAo.ku&fuEug&

1- यशप्राप्ति–मम्मट ने काव्य प्रयोजन का प्रथमउद्देश्य यशप्राप्तिबतायाहै।मानवसदैव यशप्राप्ति का लिए प्रयत्नशीलरहताहै।कविभीमानवहै।अतः काव्य

ykकोपदेशजननं ukV;ern भविष्यति।

foukndj.kykd नाट्यमेतद्–भविष्यति।।''

112&16&22

आशय स्पष्टहैकिभरत ने काव्य के प्रमुख रूप l vkuUn ,oeukjtu dk साधनमानाहै।इसकेअतिरिक्तउपदेश एवंउपकारभीकाव्य का i;ktugfdUrijवर्तीकाव्यशास्त्र के प्रणेताआचार्यो ने Hkjrनिर्दिष्टइनप्रयोजनोंकोसंक्षिप्त :Ik l Lohdkjfd;kgA

Hkkegijhkjr dk iHkkogAHkkeह के शब्दोमेंउत्तमकाव्य रचना धर्म, अर्थकामतथामोक्ष नायकपुरूषार्थ–चतुष्टय तथासमस्तकलाओंमेंनिपुणता, प्रीति ¼vkuUn½ vkjdhfrdkmRiUudjrhg&

'' धर्मार्थकाममाक्षेषुवैचक्षण्यंकलासुच।

Djkfrdhfrihfr p lk/kdk0; fucU/kueAA**

Hkkमह के इस श्लोक से विदितहै उनके स्केeu&Hkjr dk नाट्यशास्त्र उनकाआदर्शjgkgA

ukV; vFkokdk0; d loiFkei;ktdfopkjdukV;kpk;Hkjrefug bud mijkrn.MhHkkegokeuvkuUno/kuvfHkuoxlrvkpk;dUrdvkfnvudkudvkpk;k u i;ktufopkjdk dh ekykeviudkfijk;kgA

काव्य प्रयोजनविषय की विरासतमेंप्राप्तप्राचीनसंपति का मम्मkV द्वाराउपयोग श्लाहनीय है।मम्मkV d le{k Hkjr l ydjdUrdrdlHkhvkpk;k द्वारानिर्दिष्टकाव्य के प्रयोजनउपस्थितथे।मम्मट ने अपनीसमन्वयवादीदृष्टि से समस्तकाव्य प्रयोजनकोसंक्षिप्त एवंस्पष्ट रूप l bl idkjiLrrfd;kg&

'' काव्यं यशसेऽर्थकृतेव्यवहारविदेशिवेतरक्षतये।

सद्यः परनिर्वृतयेकान्तासम्मितयोपदेशयुजे।।''

eEEkVghloiFkevkydkfjdFkftUgkudk0; d i;ktu षट्क का fund ,ofu:i.kfd;kg A dk0; dh ^i;ktuijd** dh Hkkouk] समन्वय की भावनाहैजो ध्वनिवाद की दृष्टिविशेष से प्रेरितहै, इन्होनेव्यवहार, ज्ञान,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

यश, और धनप्राप्ति के साथ–साथ सद्यः परनिर्वृतयेऔरशिवेतरक्षतयेकहकररस द्वारानिरतिशयमानन्द की उपलब्धि तथाशिवेतरक्षति जीवu dk Lktu dk ,d प्रयोजन यश भीहै।भगवानश्रीकृष्ण न भी यशोलाभस्व'' कहकरनिष्कामde dh mfDr का प्रतिपादनकियाथा।महाकविभारवि ने भीलिखा है– ''यशोधिगन्तुसुखप्सिाया वा'' महाकविकालिदास की रचना यश के लिए थी। यशस्वीकविऔरसहित्यकार शाश्वतकालतकजीवितरहतेहै–

^^dhfr;L; l thofr** lLdre ,d dfo u Bhdghdgkg&

''जयन्तितेसुकृतिनोरससिद्धा कवीश्वराः।

ukfLr ;षां यशः कार्यजरामरणजंभयम्।।''

bl lEi.kr0; dkeEeV u ofÙke bl okD; l स्पष्टकियाहै– ''कालिदासादीवाभिव यशः।

vFkdr&dk0; l vFkykHkHkh lHkogbl fy, dk0;&i;ktueLFkkufn;kx;kgAdk0; l vFkykx dh dgkuh] ,d jkpddgkuhgAek/k dkHkk tjkt l dk0; fuek.kdh Lot e /kuikIrgvkFkkAHkारविको एक श्लोक से एकलक्षमæk dh ikfIrvk tHkhfo}Rl eराज मे प्रचलितहै।मम्मट ने श्रीहर्ष ,o /kkod d orkUrdkmnkgj.k d :IkeiLrrdjrg, fy[kk g&

'' श्रीहर्षादे /kkodknhukfHko /kueA**

व्यवहारविदे–व्यवहारज्ञानकोकाव्य–प्रयोजनमाननाआवश्यक

gD;kfdbfrgkl vkjykdor }kjkgkuokyo0;ogkjKkueogeuio.krk ugh gkldrh] tkdk0; }kjkgkuokyo0;ogkjKku l lHkogAoLrr% dk0;thouiFk dh lgHkkfxuhgAdk0; e0;ogkjKku dk vfHkik; gjlHkXugn; l ykdthou dk lक्षात्कारपाश्चात्य काव्य–मीमांसकोMattew Arnold dh iLrrmfDredk0; dh blhmi;kfxrk dh vfHk0;fDRkg&

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

" More& More Mankind will discover that we have to train poetry to interpret life for us, to console us, to sustain us, without poetry our Science will appear incomplete and must….. of what will pass with us for religion and philosophy will be replaced by poetry.

Lkk lfjd0;ogkjKkudjkukrFkkm li<dj0;ogkjKkugkukdk0; dk ,d lk;k tugAeEEkV u fy[kk gfd& ^^jkefnxrkf/krkpkjifjKkue** शिवेतरक्षतये–अशिव के निवारण के लिए भीकाव्य की साधना की जातीहैउदाहरण के लिए शापग्रस्तमयूर ने सूर्यस्तुति के द्वाराअपने शरीरमेंव्याप्तकुष्ठरोग का निवारणकियाथा।

vkfnR;kne;jknhukfeokuFkfuokj.keA ^^blhidkjok.kHkÍ u Hkhikorh dh Lrfr dh FkhAdk0; d fuek.k l dY;k.k lk/kugkrkgA

साद्यः परनिर्वृतये–काव्य का मूलउद्देश्य एवंप्रमुख

ijdrRovykfddkuUn dh ikfIrgAeEeV u bl dk0; dk ie[k i;k tuekukFkkAvkuUndkdk0; dk i;k tuHkjr u ** foukn tuuykd ** dgdjrFkkvfHkuoxIr u ** rFkkfiihfrjoi/kku ----------

i/kkU;ukuUæ ,okDr% rFkkihR;kRekjlLrnoukV; ,o p onbR;L;d:/;k;A ** rFkkeEEkV u ^ldyi;k tuekfyHkrleuUrjeojlkLoknudgdjLohdkjfd;kFkkAeEeV l

पूर्ववर्तीकुन्तक ने भीअन्तश्चमत्कारकोप्रधानप्रयोजन घोषितकियाहै।काव्य आनन्दकोउत्पन्नकरताहैं यह आनन्दकाव्य के समस्तप्रयोजनों ने शिरोमणिहै। कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे–मम्मट ने काव्य का अन्तिमप्रयोजन मधुरउपदेशमानाहै।काव्य के द्वारासहृदयोंकोउपदेशदेनाचाहिए राम के समानआचरणकरनाचाहिए– ^^jkekf}ofrr0; u jko.kfnor''। काव्य को शक्कर के आवरणमेंलिपटीकुनैन की गोलीकहेतोअतिशयोक्ति नही होगी।काव्य से कटुआस्वाद मधुर बन जाताहै।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

bl idkjvkpk;eEeV u dk0; d i;ktuij0;kidfopkjfd;kgA mud bl विचार–विमर्शमेंसमन्वयात्मकदृष्टिकोण का हीप्रधान्य है।मम्मट ने इनप्रयोजनोमे यश कोप्रधानस्थानदियाहै, जोकवि की दृष्टिमेंउचितहीहै।दूसरीओर सद्यः परनिर्वृतिकोसकलमौलिभूतकहकरपाठक की दृष्टि से उसकेमहत्व की स्थापना dh g] ;g ekU;rk lo/kk mfprgA

lUnHk lwph&

1- भरत का नाट्यशास्त्र
2- मम्मट का काव्यप्रकाश